आरोह
भाग 2

कक्षा 12 के लिए हिंदी (आधार) की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जनवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007 कार्तिक 1929
दिसंबर 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
नवंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941

PD 130T RSP

₹ 80.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा गोयल स्टेशनर्स, बी-36/9, जी. टी. करनाल रोड इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110033 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-659-4

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक : *मुकेश गौड़*

आवरण एवं चित्र

अरविंदर चावला

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

यह पुस्तक

समय हर पल बदल रहा है, दुनिया हर क्षण नयी हो रही है, साहित्य में हर पल कुछ जुड़ रहा है, भाषा हर क्षण नया-नया रूप ले रही है–तो फिर इन तमाम बदलाव के साथ कदम बढ़ाते बच्चों के हाथ में एक नयी पाठ्यपुस्तक क्यों नहीं?

पिछले दिनों नयी पाठ्यपुस्तकों के आने के बाद शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों और टेली कांफ्रेंसिंग के ज़रिये अध्यापकों से जुड़ने का मौका मिला। उनकी आँखों में नएपन की चमक थी, ज़बान पर कुछ सवाल, जो घूम फिरकर लगभग हर कार्यक्रम में उठते रहे। बार-बार नयी किताब क्यों? तरह-तरह की हिंदी क्यों? अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? इत्यादि-इत्यादि।

उपर्युक्त सारे सवाल एक विशेष डोर से बँधे हैं–वह है राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005)। यह सुझाती है कि शिक्षा के उद्देश्य व्यापक होने चाहिए जिनमें–'विचार और काम की स्वतंत्रता, दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, नयी स्थितियों का लचीलेपन और रचनात्मक तरीके से सामना करना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति और आर्थिक प्रक्रियाओं तक सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता' (रा.पा.-2005, सार संक्षेप)प्रमुख हैं। शिक्षा के इन उद्देश्यों को आज के जटिल होते समाज में विशेषकर भाषा साहित्य के विद्यार्थियों को बार-बार जाँचने परखने की ज़रूरत है। इसी ज़रूरत को पूरी करने का प्रयास है–'आरोह भाग-2' जिसका निर्माण कक्षा-12 में हिंदी (आधार पाठ्यक्रम) पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए किया गया है।

तरह-तरह की हिंदी क्यों? हिंदी एक व्यापक भाषा है और संपर्क भाषा भी है। इसका लेखक और पाठक समुदाय भी बड़ा है। जो कुछ रोज़ रचा जा रहा है उसका दायरा एक ओर कश्मीर से कन्याकुमारी तक है तो दूसरी ओर विभिन्न अनुशासनों के रूप में इसका विस्तार भी है। एक ही शब्द नए प्रसंग में रखे जाने पर अलग अर्थ दे सकता है। यह समाज विज्ञान, पर्यावरण, विज्ञान, कला और साहित्य की भाषा को एक ज़िल्द में पढ़कर बेहतर जाना जा सकता है। भाषा के ये अलग-अलग प्रयोग ही उसे नया करते हैं। वह ठहरी हुई निर्जीव वस्तु नहीं है, बल्कि अपने वैविध्य के साथ विकास करती हुई सजीव धारा है। वैयाकरण किशोरीदास वाजपेयी ने लोक को ही भाषा के बनने का सबसे बड़ा प्रमाण कहा है।

अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? आज का युग सूचना-क्रांति का है। इस युग में धीरे-धीरे मनुष्य सूचनाओं में तब्दील हो रहा है। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में भी– 'हमने समझ के बदले थोड़े वक्त की जानकारी के अंबार को अपना लिया है। इस प्रक्रिया को उलटना होगा। खासकर इस वक्त जब वह सब कुछ जो याद किया जा सकता है, फट पड़ने को तैयार है' (रा. पा. की रूपरेखा-2005, प्राक्कथन)। भारत अपने मूल स्वभाव में ही बहुभाषी और बहुलतावादी संस्कृतिसंपन्न देश है। ऐसे में यहाँ के युवा होते बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता की पहचान किसी एक पैमाने या तयशुदा उत्तर से संभव नहीं। उन्हें जाँचने-परखने के लिए तो उनकी अभिव्यक्ति विशेष की पहचान कर उसे तराशना ही भाषा

साहित्य के मूल्यांकन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखकर निर्मित प्रश्न अभ्यास विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी अलग-अलग विशेषता को पहचानने और बढ़ावा देने का माध्यम बन सकते हैं।

उपर्युक्त तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को **काव्य खंड** और **गद्य खंड** (दो खंडों) में बाँटा गया है। **काव्य खंड** को पहले रखने का कारण कविता का सबसे पुरानी विधा होने के साथ-साथ विद्यार्थियों का इसके प्रति स्वाभाविक रुझान भी है। कक्षा-10 तक विद्यार्थी ऐतिहासिक क्रम में कवियों से परिचित हो चुका होता है, इसलिए **काव्य खंड** का क्रम निर्धारण सरलता से कठिनाई के सामान्य शैक्षिक नियम को ध्यान में रख कर किया गया है। अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों में गुजराती के वरिष्ठ कवि उमाशंकर जोशी और उर्दू के शायर फ़िराक गोरखपुरी को स्थान दिया गया है। हिंदी कविता के साथ भारतीय भाषाओं के इन कवियों को पढ़ना बहुभाषी बहुक्षेत्रीय परिवेश में एक ही रचनात्मक भाव-भूमि की पहचान के रूप में देखा जा सकता है।

गद्य खंड में आर्थिक चिंतन, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, संस्कृति और विज्ञान, पर्यावरण और प्रकृति, लुप्त प्राय प्राचीन कला, विभाजन की दरार से झाँकते मनुष्य, फ़िल्मी चरित्र में आम आदमी पर केंद्रित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

वर्तमान समय में विकास को परिभाषित करता बाज़ार, सशक्त माध्यम के रूप में फ़िल्म और उन सबसे बनता समाज हमारी सोच के केंद्र में है। जहाँ एक ओर बाज़ार ने रोज़गार और व्यापार के अवसर दिए हैं, वहीं दूसरी ओर हमें अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। नतीजा यह कि दिनोदिन हमारे सोचने-विचारने की दिशा अर्थ-केंद्रित होती जा रही है। जैनेंद्र का *बाज़ार-दर्शन* जैसा पाठ यह अवसर देता है कि हम बाज़ार में रहते हुए बाज़ारवाद से मुक्ति के रास्ते तलाशें।

स्वतंत्रता प्राप्ति और स्वतंत्र भारत की परिकल्पना में जिन लोगों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है उनमें गांधी और आंबेडकर का नाम सबसे पहले आता हैं। 'जातिभेद का उच्छेद' नामक महत्त्वपूर्ण भाषण जो काफी विरोधों के बाद भी छपा और बहुत लोकप्रिय हुआ; उसके दो अंश यहाँ लिए गए हैं जो वास्तव में पिछड़े वर्गों को ध्यान में रखते हुए जाति-विमर्श पर विचार के बहाने स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर आधारित आदर्श समाज को विचारने का अवसर देते हैं।

पुस्तक की प्रस्तुति 'एक नयी किताब' का सबसे नया और अहम हिस्सा होती है– खासतौर से तब जब पाठ्यचर्या बच्चों के अपने परिवेश और जीते जागते संदर्भों से जोड़कर शिक्षा की बात कर रही है। इस पुस्तक का चयन, प्रश्न-अभ्यास और साज-सज्जा-तीनों ही नए शैक्षिक परिवेश का निर्माण करने में सहायक होंगे।

पुस्तक में ऐसे अभ्यास भी दिए गए हैं जिनके कारण इस बार 'आरोह भाग-1' और 'वितान भाग-1' को पढ़ने की ज़रूरत पड़ सकती है। साथ ही ये अभ्यास पुस्तकालयों में पड़ी बहुत-सी अनछुई किताबों की दुनिया तक ले जाने को विवश करेंगे और नयी पुस्तकों, अखबारों व रोज़ की खबरों के प्रति सचेत कराने में समर्थ होंगे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005) में इन बातों पर खासा बल है।

अभिव्यक्ति की अपनी भाषा को आमंत्रित करती 'आरोह भाग-2' आपके हाथों में है जिसके संशोधन परिवर्धन के लिए सुझावों का निरंतर स्वागत रहेगा। ❑❑❑

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू. नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनूप कुमार, *प्रोफ़ेसर,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

अनामिका, *रीडर,* सत्यवती कॉलेज, नयी दिल्ली

उषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

दिलीप सिंह, *प्रोफ़ेसर एवं कुल सचिव,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

नीलकंठ कुमार, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नीरजा रानी, *पी.जी.टी.,* चंद्र आर्य विद्यामंदिर, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नयी दिल्ली

रवीन्द्र कुमार पाठक, *पी.जी.टी,* राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, भारतनगर, दिल्ली

रवीन्द्र त्रिपाठी, *पत्रकार,* नयी दिल्ली

रामबक्ष, *प्रोफ़ेसर,* जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संजीव कुमार, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* देशबन्धु कॉलेज, नयी दिल्ली

समीर वरण नंदी, *प्रवक्ता,* बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों/परिजनों, प्रकाशकों तथा 'शिरीष के फूल' के फोटोग्राफ़ के लिए शमशेर अहमद खान के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित शारदा कुमारी, *प्रवक्ता,* डाइट, आर. के.पुरम, नयी दिल्ली तथा पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कम्प्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *कॉपी एडीटर* समीना उसमानी, मनोज मोहन सहाय, अवध किशोर सिंह; *प्रूफ़ रीडर* कविता और *डी.टी.पी. ऑपरेटर* कमल कुमार के प्रति आभारी हैं।

विषय-क्रम

काव्य खंड

गद्य खंड